एएसईएम सम्मेलन में स्वागत भाषण *

दीपक मोहंती

1. श्री पीटर बैक्स, निदेशक, यूरोपीय आयोग, श्री सूबीर गोकर्ण, उप गवर्नर, श्री मोरेनो बार्तोल्डी, यूरीपीय कमीशन इकाई के अध्यक्ष, सुश्री वैलेरी रॉक्सेल-लैक्सटॉन, सेक्टर प्रमुख, यूरोपीय कमीशन, एएसईएम के सदस्य देशों के विशिष्ट प्रतिनिधिगण, केंद्रीय बैंकों के माननीय सहकर्मीगण, बहुपक्षीय संस्थाओं, थिंक टैंक तथा विद्वत समाज के प्रतिनिधिगण, विशिष्ट विशेषज्ञ तथा मेरे मित्रगण। इस एएसईएम सम्मेलन में मुझे भारतीय रिज़र्व बैंक तथा अपनी ओर से आप सभी का स्वागत करने का अवसर प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं वास्तव में गौरवान्वित हूँ। मैं समझता हूं कि यूरोपीय कमीशन की भारत में यह पहली बैठक है। इस आयोजन का अवसर देने के लिए मैं यूरोपीय कमीशन को धन्यवाद देता हूँ।

2. इस सुंदर शहर मुंबई में आप सभी का स्वागत करने का अवसर पाकर मैं वास्तव में स्वयं को सम्मानित अनुभव कर रहा हूं। आप में से कुछ लोगों को ज्ञात होगा कि भारतीय इतिहास की दृष्टि से तथा वाणिज्य के क्षेत्र में मुंबई का एक अलग ही स्थान है। मुंबई जो कि सात टापुओं में बसा हुआ है, अंग्रेजों के अधिकार में आने वाला प्रथम भारतीय क्षेत्र है। इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय के पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह के अवसर पर शाही दहेज के रूप में मुंबई इंग्लैंड के अधिकार में आया। इसे बाद में 10 पौंड की राशि के बदले ईस्ट इंडिया कंपनी को लीज पर दिया गया। इस कीमत पर आपको आज मुंबई में एक वर्ग इंच जमीन भी नहीं मिलेगी। आज मुंबई दुनिया के सबसे महंगे शहरों में से एक है। यह भारत का व्यापारिक शहर है तथा भारत के वाणिज्य के एक बड़े हिस्से का लेनदेन यहीं होता है। कई प्रमुख बैंकों, वित्तीय संस्थाओं, बीमा कंपनियों और स्टाक एक्सचेंजों के मुख्यालय यहां हैं। इसके भारत के सबसे गतिशील तथा मिश्रित संस्कृति वाला एक शहर होने का सबूत यही है कि शहर के अंदर बॉलीवुड की उपस्थिति है जो हिंदी फिल्म तथा टेलीविजन उद्योग का केंद्र है और इसका प्रभाव विश्वव्यापी है। इस शहर ने कई संकटों का सामना हिम्मत से किया है और इसने अपनी गतिशीलता को बनाए रखा है। यही बातें हैं जो मुंबई की सही पहचान हैं ! चाहे जो हो, मुझे विश्वास है कि यहां रहने के दौरान आपको शहर में घूमने का अवसर मिलेगा और यहां की तेज गति वाली जिन्दगी को करीब-से देखने का मौका मिलेगा। इस होटल के ठीक सामने मरीन ड्राईव है जो 'रानी के हार' के रूप में प्रसिद्ध है। होटल के रुफटाप में रात्रि-भोज का आनंद लेते समय आप स्वयं इसे देख सकेंगे। मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि वर्ष के इस समय यहां का मौसम काफी खुशनुमा रहता है।

3. अब मैं आज के विषय की ओर लौटता हूँ। एशिया-यूरोप बैठक, जिसे आम तौर पर एएसईएम कहा जाता है, एशिया और यूरोप के आपसी समन्वय का एक प्रयास है जिसका उद्देश्य दोनों ही क्षेत्रों में वृद्धि के अवसरों को आगे बढ़ाना है। एएसईएम का फोरम एशिया और यूरोप के बीच वित्त, शिक्षा, संस्कृति, जलवायु, सूचना प्रौद्योगिकी तथा अभिशासन से जुड़े लगभग सभी संबंधित मुद्दों पर विभिन्न स्तरों पर बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। एएसईएम सम्मेलन की श्रृंखलाएं, जो समसामयिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, एएसईएम बातचीत के दौरान उपयोगी आधार-सामग्री उपलब्ध कराती हैं। एएसईएम के पहले हुए सम्मेलनों में, चाहे उनका विषय वित्त अथवा वृद्धि अथवा आतंकवाद रहे हों, प्रासंगिक मुद्दों पर गंभीर चर्चाएं हुईं तथा इनसे वे मुद्दे उभरकर आए जिन्होंने यूरोप तथा एशिया दोनों में नीति-निर्माण में मदद की।

4. वर्तमान सम्मेलन की विषय-वस्तु ''निवेश और उसका वित्तपोषणः क्या कारण है कि एशिया में निजी निवेश अपेक्षाकृत कम है?'' समसामयिक है और इस पर चर्चा करने के लिए इससे बेहतर कोई दूसरा समय नहीं हो सकता था। दो कारणों से यह विषय विशेष रूप से अति महत्त्वपूर्ण है। पहला, चूंकि हम पिछले कुछ वर्षों के दौरान की वित्तीय उथल-पुथल की स्थिति से उबर रहे हैं, इसलिए सकल मांग को बनाए रखने के लिए संभावित उत्पादन की बहाली हेतु निवेश की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। दूसरा, एशिया की उभरती अर्थव्यवस्थाओं में निवेश में होने वाली वृद्धि वैश्विक अर्थव्यवस्था की त्वरित बहाली की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, क्योंकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के अति विस्तारित तुलनपत्रों के कारण वैश्विक बहाली में देरी हो रही है।

5. मेरे विचार में एशिया तथा यूरोप दोनों के शिक्षाविदों तथा नीति निर्माताओं द्वारा इस मंच को एक ऐसे अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए जो न केवल एक दूसरे के अनुभवों से सीखने का मौका देगा बल्कि तीव्रतर तथा व्यवधान रहित वृद्धि-पथ पर लौटने की दिशा में एक दृष्टि का विकास भी करेगा। प्रत्येक संकट के बाद बाजार के

* 'निवेश और उसका वित्तपोषण : क्या करण है कि एशिया में निजी निवेश अपेक्षाकृत कम है?' विषय पर मुंबई में 16 और 17 दिसंबर 2010 को आयोजित एएसईएम सम्मेलन में भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री दीपक मोहंती का स्वागत भाषण ।

घटक, विनियामक, समाचार तथा शिक्षा जगत से जुड़े लोग आम तौर पर यह मानते हुए स्वयं को तसल्ली देते हैं कि इस बार का संकट पहले से भिन्न है। परंतु ऐसा नहीं होता। पिछले अनुभव से बहुत कुछ सीखा जा सकता है और एएसईएम सम्मेलन जैसा मंच एक दूसरे के अनुभवों का लाभ उठाने के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

6. अब मैं सम्मेलन की रूपरेखा के बारे में संक्षेप में चर्चा करूँगा। हम सम्मेलन की विषयवस्तु पर चर्चा पांच सत्रों तथा एक पैनल चर्चा के माध्यम से करेंगे। हम सम्मेलन की शुरुआत हमारे उप गवर्नर डॉ.सूबीर गोकर्ण के विषय-प्रवर्तन भाषण से करेंगे जिसके बाद तकनीकी सत्र तथा चर्चाएं होंगी।

7. पहले सत्र का विषय है - वे कौन-कौन से कारक हैं जो एशिया में निवेश को प्रभावित करते हैं। दूसरे सत्र में एशिया में निवेश तथा उत्पादकता में वृद्धि से जुड़े विषय पर गंभीर चर्चा होगी । तीसरे सत्र में एशियाई देशों में कर्ज में वृद्धि तथा वित्तीय स्थिरता से जुड़े विषयों पर चर्चा होगी। आज के चौथे सत्र में, जो कि आज का अंतिम सत्र होगा, उन उपायों पर चर्चा की जाएगी जिनसे एशिया में देशी बचत को निवेश में परिवर्तित करने में मदद मिलेगी। कल हम पांचवें सत्र का प्रारंभ निवेश को बढ़ाने में वित्तीय क्षेत्र तथा कर्ज की उपलब्धता में वृद्धि की भूमिका पर चर्चा करेंगे। उसके बाद 'एशिया की वृद्धि में मूलभूत ढांचे की खामियों का प्रभाव' विषय पर एक पैनल चर्चा होगी जिसकी अध्यक्षता भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्व गवर्नर डॉ.वाई.वी. रेड्डी करेंगे।

8. मैं आप सभी का पुनः स्वागत करता हूँ। मुंबई की स्थानीय भाषा मराठी में कहें तोः आमच्या मुंबईत तुम्हा सर्वांचे स्वागत आहे। हमारे मुंबई शहर में आप सभी का स्वागत है। मैं आशा करता हूँ कि इन दो दिनों में न केवल सफल चर्चाएं होंगी बल्कि निरंतर वैश्विक रूप ले रही दुनिया में एशिया तथा यूरोप के समुदाय एक दूसरे के और करीब भी आएंगे।